

अरावली पर सख्ती

राश्रीय राजधानी क्षेत्र में पर्यावरणीय दृष्टि से संवेदनशील अरावली क्षेत्र में अवैध खनन पर रोक लगाने के प्रयासों में शिथिलता के चलते एक बार फिर नेशनल ग्रीन ट्रिभ्यूलन यानी एनजीटी ने तल्ली दिखायी है। निस्सदैह, हारयाणा सरकार की आलोचना के भूल में चिंता बढ़ाने वाली चुके की लंबी शृंखला शामिल है। दरअसल, सरकार की कानूनी वाध्यता के बाबजूद प्राथमिकी तक दर्ज नहीं की गई। वहीं दसरी ओर कई मामलों में जांच-पड़ताल लेकर समय से लंबत रही है। इतना ही नहीं, कई मामलों में कानून के प्राथमिक प्रवधान प्राथमिकी और चार्जरी में नहीं जोड़ गये हैं। विवंबना ही है कि अवैध खनन व परिवहन से संबंधित सात आपाराधिक मामलों में आरोपी बरी हो गये। निस्सदैह, यह घटनाक्रम बताता है कि अवैध खनन रोकने की दिशा में कानून कदम नहीं उठाये गए हैं। कह सकते हैं कि जिम्मेदार अधिकारियों की अशक्ती, पर्यास प्रशश्नकार का अभाव व कदाचार के बीच लापत्ती के चलते कानूनी प्रवधानों का पालन नहीं हो पाया है। इन मामलों में उल्लेखनीय का उल्लेख एनजीटी ने किया भी है। वित्त में भी नेशनल ग्रीन ट्रिभ्यूलन तंत्र की उत्तरीनीता की ओर ध्यान दिला चुका है और सरकार से सख्त कार्रवाई की मांग कर चुका है। कह सकते हैं कि एनजीटी की हालिया टिप्पणी राज्य सरकार के उन दावों की हकीकत पर सवाल उठाती है कि जिसको लेकर राज्य सरकार मामले में सख्त क्रिया होने का दावा करती रही है। यही वजह है कि नेशनल ग्रीन ट्रिभ्यूलन इस मामले में सख्त टिप्पणी करता रहा है। बहरहाल, इस समस्या का गाहे-बगाहे उत्तरांग होना दर्शाता है कि इस मामले में सख्त कार्रवाई के लिये प्रासादिक व राजनीतिक वालजूद स्टोन राज्य और स्ट्रीलिंग प्लाट्स की गतिविधियों वित्त बढ़ाने वाली बतायी जाती है, जिसके बाबत एनजीटी ने जानकारी मार्गी है। अरावली क्षेत्र में खनियों की खरीद, उहाँ ले जाने वाले वालों के लिये स्थापित चेकपोर्टों की संख्या, जीपोंस आदि आधुनिक तकनीकों समेत निगरानी तंत्र के बाबत राज्य सरकार से हलफारा मामग गया है। साथ ही हारयाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से कहा गया है कि वह पर्यावरण शिल्पीत व अवैध खनन रोकने के लिये एक क्रिया योग्य समाझों के उपयोग से भूमि को भूल अवधारणा में लाने तथा पुनर्वास करने के लिये एक कार्य योजना प्रस्तुत करे। निस्सदैह, इस जटिल होती समस्या के स्थापी समाधान के लिये एक स्वतंत्र अरावली संरक्षण प्राधिकरण स्थापित करने पर विचार करने की जरूरत महसूस की जा रही है। ऊमीद की जानी चाहिए कि एनजीटी के सख्त रखैये के बाबत राज्य सरकार प्रभावी कार्रवाई के लिये रणनीति में बदलाव करेंगी। सही मायनों में यह राज्य सरकार वाकई ही खनन माफिया की गतिविधियों पर लगाम लगाने के प्रति गंभीर दिखाना चाहती है तो इस मामले में लापत्ती वाले अधिकारियों को भी जांच व कार्रवाई के दावे में लाने की जरूरत है। तभी हम पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्यों को हासिल कर सकते हैं।

भाजपा ने दिजाव विवाद, हलाल, बीफ पर प्रतिवाच को फैले मूल बनाया, जो चुनाव के आधिकारियों ने रखी मर्यादा तक पर रखते हुए लोगों से बजरंग दली की जय बोल कर गोंद देने वाले, और चुनाव आयोग को इसमें कुछ गलत भी नहीं दिखा। बजरंग दली की जय के जबता वे अगर दूसरे धार्मिक नारों को उड़ाता जाता तो वहा हालात नहीं दिखाई। गरीब नहीं कहा। भाजपा नेताओं की धमकियों और धुक्कियों के बाबजूद कर्नाटक में माहोल जात और सद्दरापूर्ण है। केल स्टोरों का जवाब कर्नाटक स्टोरों के रूप में देश के समान आ चुका है कि नफरत और दूर का कारोबार अधिक वर्क तक नहीं चल सकता। नफरती कारोबार के शेयर पिछले 9 सालों में देखा है और लेकिन गहुल गांधी ने इस दुरुन के शरद मिशन में जाही दूर तक संरक्षित प्राप्त कर ली है। कर्नाटक चुनाव में जीत का रेहाया की प्रत्येक इकाई राजनीति कार्रवाईओं, नेताओं और केंद्रीय सेवत जो जीत है। लेकिन गहुल गांधी इस जीत की भूमिका अवक्षुल 2022 में ही बढ़ जाए थी, जब भाजपा नेताओं की धमकियों और धुक्कियों के बाबजूद कर्नाटक में माहोल जात और सद्दरापूर्ण है। केल स्टोरों का जवाब कर्नाटक स्टोरों के रूप में देश के समान आ चुका है कि नफरत और दूर का कारोबार अधिक वर्क तक नहीं चल सकता। नफरती कारोबार के शेयर पिछले 9 सालों में देखा है और लेकिन गहुल गांधी ने इस दुरुन के शरद मिशन में काही दूर तक सफलता प्राप्त कर ली है। कर्नाटक चुनाव में जीत का सेहरा काप्रेस की प्रदेश राजनीति की विचारधारा की कार्रवाई और सद्दरापूर्ण है। लेकिन गहुल गांधी इस जीत की भूमिका अवक्षुल 2022 में ही बढ़ जाए थी, जब भाजपा नेताओं की धमकियों और धुक्कियों के बाबजूद कर्नाटक में माहोल जात और सद्दरापूर्ण है। केल स्टोरों का जवाब कर्नाटक स्टोरों के रूप में देश के समान आ चुका है कि नफरत और दूर का कारोबार अधिक वर्क तक नहीं चल सकता। नफरती कारोबार के शेयर पिछले 9 सालों में देखा है और लेकिन गहुल गांधी ने इस दुरुन के शरद मिशन में काही दूर तक सफलता प्राप्त कर ली है। कर्नाटक चुनाव में जीत का सेहरा काप्रेस की प्रदेश राजनीति की विचारधारा की कार्रवाई और सद्दरापूर्ण है। लेकिन गहुल गांधी इस जीत की भूमिका अवक्षुल 2022 में ही बढ़ जाए थी, जब भाजपा नेताओं की धमकियों और धुक्कियों के बाबजूद कर्नाटक में माहोल जात और सद्दरापूर्ण है। केल स्टोरों का जवाब कर्नाटक स्टोरों के रूप में देश के समान आ चुका है कि नफरत और दूर का कारोबार अधिक वर्क तक नहीं चल सकता। नफरती कारोबार के शेयर पिछले 9 सालों में देखा है और लेकिन गहुल गांधी ने इस दुरुन के शरद मिशन में काही दूर तक सफलता प्राप्त कर ली है। कर्नाटक चुनाव में जीत का सेहरा काप्रेस की प्रदेश राजनीति की विचारधारा की कार्रवाई और सद्दरापूर्ण है। लेकिन गहुल गांधी इस जीत की भूमिका अवक्षुल 2022 में ही बढ़ जाए थी, जब भाजपा नेताओं की धमकियों और धुक्कियों के बाबजूद कर्नाटक में माहोल जात और सद्दरापूर्ण है। केल स्टोरों का जवाब कर्नाटक स्टोरों के रूप में देश के समान आ चुका है कि नफरत और दूर का कारोबार अधिक वर्क तक नहीं चल सकता। नफरती कारोबार के शेयर पिछले 9 सालों में देखा है और लेकिन गहुल गांधी ने इस दुरुन के शरद मिशन में काही दूर तक सफलता प्राप्त कर ली है। कर्नाटक चुनाव में जीत का सेहरा काप्रेस की प्रदेश राजनीति की विचारधारा की कार्रवाई और सद्दरापूर्ण है। लेकिन गहुल गांधी इस जीत की भूमिका अवक्षुल 2022 में ही बढ़ जाए थी, जब भाजपा नेताओं की धमकियों और धुक्कियों के बाबजूद कर्नाटक में माहोल जात और सद्दरापूर्ण है। केल स्टोरों का जवाब कर्नाटक स्टोरों के रूप में देश के समान आ चुका है कि नफरत और दूर का कारोबार अधिक वर्क तक नहीं चल सकता। नफरती कारोबार के शेयर पिछले 9 सालों में देखा है और लेकिन गहुल गांधी ने इस दुरुन के शरद मिशन में काही दूर तक सफलता प्राप्त कर ली है। कर्नाटक चुनाव में जीत का सेहरा काप्रेस की प्रदेश राजनीति की विचारधारा की कार्रवाई और सद्दरापूर्ण है। लेकिन गहुल गांधी इस जीत की भूमिका अवक्षुल 2022 में ही बढ़ जाए थी, जब भाजपा नेताओं की धमकियों और धुक्कियों के बाबजूद कर्नाटक में माहोल जात और सद्दरापूर्ण है। केल स्टोरों का जवाब कर्नाटक स्टोरों के रूप में देश के समान आ चुका है कि नफरत और दूर का कारोबार अधिक वर्क तक नहीं चल सकता। नफरती कारोबार के शेयर पिछले 9 सालों में देखा है और लेकिन गहुल गांधी ने इस दुरुन के शरद मिशन में काही दूर तक सफलता प्राप्त कर ली है। कर्नाटक चुनाव में जीत का सेहरा काप्रेस की प्रदेश राजनीति की विचारधारा की कार्रवाई और सद्दरापूर्ण है। लेकिन गहुल गांधी इस जीत की भूमिका अवक्षुल 2022 में ही बढ़ जाए थी, जब भाजपा नेताओं की धमकियों और धुक्कियों के बाबजूद कर्नाटक में माहोल जात और सद्दरापूर्ण है। केल स्टोरों का जवाब कर्नाटक स्टोरों के रूप में देश के समान आ चुका है कि नफरत और दूर का कारोबार अधिक वर्क तक नहीं चल सकता। नफरती कारोबार के शेयर पिछले 9 सालों में देखा है और लेकिन गहुल गांधी ने इस दुरुन के शरद मिशन में काही दूर तक सफलता प्राप्त कर ली है। कर्नाटक चुनाव में जीत का सेहरा काप्रेस की प्रदेश राजनीति की विचारधारा की कार्रवाई और सद्दरापूर्ण है। लेकिन गहुल गांधी इस जीत की भूमिका अवक्षुल 2022 में ही बढ़ जाए थी, जब भाजपा नेताओं की धमकियों और धुक्कियों के बाबजूद कर्नाटक में माहोल जात और सद्दरापूर्ण है। केल स्टोरों का जवाब कर्नाटक स्टोरों के रूप में देश के समान आ चुका है कि नफरत और दूर का कारोबार अधिक वर्क तक नहीं चल सकता। नफरती कारोबार के शेयर पिछले 9 सालों में देखा है और लेकिन गहुल गांधी ने इस दुरुन के शरद मिशन में काही दूर तक सफलता प्राप्त कर ली है। कर्नाटक चुनाव में जीत का सेहरा काप्रेस की प्रदेश राजनीति की विचारधारा की कार्रवाई और सद्दरापूर्ण है। लेकिन गहुल गांधी इस जीत की भूमिका अवक्षुल 2022 में ही बढ़ जाए थी, जब भाजपा नेताओं की धमकियों और धुक्कियों के बाबजूद कर्नाटक में माहोल जात और सद्दरापूर्ण है। केल स्टोरों का जवाब कर्नाटक स्टोरों के रूप में देश के समान आ चुका है कि नफरत और दूर का कारोबार अधिक वर्क तक नहीं चल सकता। नफरती कारोबार के शेयर पिछले 9 सालों में देखा है और लेकिन गहुल गांधी ने इस दुरुन के शरद मिशन में काही दूर तक सफलता प्राप्त कर ली है। कर्नाटक चुनाव में जीत का सेहरा काप्रेस की प्रदेश राजनीति की विचारधारा की कार्रवाई और सद्दरापूर्ण है। लेकिन गहुल गांधी इस जीत की भूमिका अवक्षुल 2022 में ही बढ़ जाए थी, जब भाजपा नेताओं की धमकियों और धुक्कियों के बाबजूद कर्नाटक में माहोल जात और सद्दरापूर्ण है। केल स्टोरों का जवाब कर्नाटक स्टोरों के रूप में देश के समान आ चुका है कि

